अध्याय 32

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[एकान्त समय]* **निर्गमन 11:1-14:31**

आगे बढकर (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि अपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (निर्गमन 11:1-14:31)से क्या सीखा।
अपने अभुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[सुसमाचार]* **उद्धार एक वरदान है :इफिसियों 2:8-9**

क-ध्यान करना

इफिसियों 2:4-10 पढ़ें। "परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है) और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है, और न कर्मो के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

निम्नलिखित याद करने वाले को वचन को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

उद्धार एक वरदान है इफिसियों 2:8-9
क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है, और न कर्मो के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। इफिसियों 2: 8-9

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पद लिखें:

1.परमेश्वर का प्रेम, दया और उसका अनुग्रह।

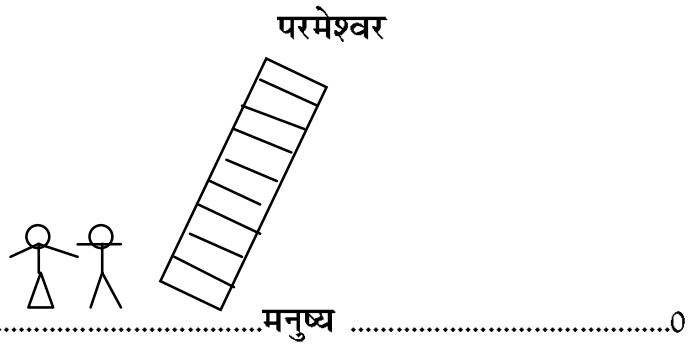
प्रेम,दया और अनुग्रह में क्या अन्तर है? परमेश्वर प्रेम है? (1यूहन्ना 4:8)। परमेश्वर दयालु हैं (लूका 6:36)। और परमेश्वर अनुग्रह कारी है (निर्गमन 34:6)। परमेश्वर अवर्णीय है, पापियों के प्रति उसका प्रेम हमेशा अवर्णीय और अनोखा बना रहेगा (व्यवस्थाविवरण 7:7-8)। परमेश्वर का अनुग्रह और उसकी दया उसके प्रेम के दो अलग अलग पहलू हैं। परमेश्वर की दया हम पर तरस खाती है और उसका अनुग्रह हमें क्षमा करता है। परमेश्वर की दया उसका वह प्रेम है जो वह हम अभागों पर तरस खाकर करता है। परमेश्वर का अनुग्रह वह प्रेम है जो वह हमारे दोषी और अयोग्य होने पर भी अपनी भलाई व क्षमा के द्वारा हम पर प्रगट करता है।

2. उद्धार अनुग्रह के द्वारा है कामों के कारण नहीं।

अनुग्रह के द्वारा उद्धार पाने का अर्थ अयोग्य होने पर भी पापों से बचना होता है। इसका अर्थ पापों के दोष से बचना है, जिसका अर्थ पूरी तरह क्षमा किया जाना होता है। जिसका अर्थ पापों के दण्ड से बचना होता है अर्थात अनन्त जीवन प्रदान

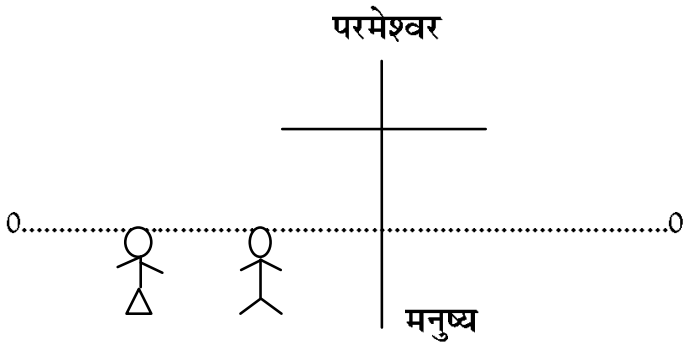
किया जाना। इसका अर्थ पापमय स्वभाव को शक्ति से बचना होता है, जिसका मतलब हुआ अभी और सदा काल के लिए नया जीवन व्यतीत करना। अनुग्रह से उद्धार पाने का अर्थ कामों से उद्धार पाने के बिल्कुल विपरीत होता है।

अपने कामों द्वारा उद्धार पाने का प्रयास (अपनी योग्यता)



यह धारणा कि बच्चे जन्म के समय पर निर्दोष होते हैं और हर एक जन धर्म के काम करके उद्धार पाता है (व्यवस्था का पालन

पूर्णत: परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार पाना(मसीह की योग्यता)



मानते हैं कि हर जन पाप में पैदा हुआ और भटका हुआ है(भजन 51:5;अय्यूब 14:4) और उसे एक उद्धारकर्ता की ज़रूरत है।

भलाई और कठिन परिश्रम करने का प्रयास करें। यदि किसी व्यक्ति का अपनी सामाजिक सेवकाई,या धार्मिक कामों या भले कामों से उद्धार पाना सम्भव होता तो वह लोगों को उद्धार पाने के लिए परमेश्वर की ज़रूरत नहीं होती। तब तो लोग परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होकर कर कह सकते थे "कि मैंने अपने कामों को वजह से उद्धार पाया है"।

लेकिन बाइबल स्पष्ट रूप में कहती है कि हमारा उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से हुआ है अपने कामों के द्वारा नहीं! परमेश्वर ही उद्धार करने वाला और उद्धार देने वाला है। उसने यीशु मसीही की मृत्यु व उसके पुनरूत्थान के द्वारा उद्धार की व्यवस्था की और वह विश्वास करने वालों को उद्धार मुफ्त में प्रदान करता है। अनुग्रह के द्वारा उद्धार का अर्थ है कि प्रारम्भ से लेकर अन्त तक उद्धार परमेश्वर की ओर मुफ्त उपहार है, जिसके हम योग्य नहीं हैं और जिसे कमा या खरीद नहीं सकते हैं।

3. उद्धार विश्वास के द्वारा है।

सारे मसीही लोग विश्वास करते हैं कि हमारा उद्धार यीशु मसीह के प्रायश्चित,उसके अनुग्रह और उस पर विश्वास करने के द्वारा हुआ है। लेकिन मसीही लोग विश्वास को अलग अलग नज़रिये से देखते हैं। कई मसीही लोग कहते हैं कि विश्वास परमेश्वर का उपहार नहीं, वरन यह परमेश्वर की ज़िम्मेदारी है। लेकिन कुछ मसीही कहते हैं कि विश्वास परमेश्वर का मुफ्त वरदान और मनुष्यों की जिम्मेदारी है।

विश्वास को केवल मनुष्यों की ज़िम्मेदारी समझने वाला नज़रिया।

ये मसीही कहते हैं कि वचन में लिखी हुई बात 'वह तुम्हारी ओर से नहीं है, वरन परमेश्वर का वरदान है' "विश्वास" को नहीं दर्शाता बल्कि "अनुग्रह के द्वारा उद्धार" को दर्शाता है। इसलिए वे कहते हैं कि "उद्धार" तो परमेश्वर की ओर से बहुमूल्य वरदान है परन्तु "विश्वास" नहीं है, बल्कि यह लोगों की जिम्मेदारी है। लेकिन, यह नज़रिया समान नहीं है, क्योंकि यदि पहले यह कहा जाए कि 'उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से है" और फिर हम ये कहें कि 'उद्धार लोगों के द्वारा नहीं है, वरन यह तो परमेश्वर का वरदान है" तो यह बात को फालतू में दोहराना होगा। इसके अलावा ग्रीक भाषा में 'यह' शब्द वास्तव में प्रारम्भिक बातों को दर्शाता है: अर्थात 'उद्धार " जैसे दूर दिखने वाले शब्द की जगह 'विश्वास'।

विश्वास को पहले परमेश्वर की ओर से वरदान तथा बाद में मनुष्यों के जिम्मेदारी समझने वाला नज़रिया।

ये मसीही लोग विश्वास के सन्दर्भ में कहते हैं कि "अनुग्रह परमेश्वर का कार्य है, किसी मनुष्य का काम नहीं" और ' विश्वास परमेश्वर का वरदान है वह मनुष्य द्वारा प्रदान की गयी चीज नहीं है।" वे कहते हैं कि यद्यपि विश्वास करने की जिम्मेदारी और विश्वास करने के लिए किये जाने वाल काम मनुष्य की ज़िम्मेदारी है" (मरकुस 1:15; रोमियों 1:16), फिर भी इफिसियों 2:4-10 में इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि चाहे प्रारम्भ हो या काम को लगातार आगे बढ़ाने की बात हो विश्वास पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर करता है। प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मनुष्य का पूरा उद्धार परमेश्वर पर ही निर्भर होता है (फिलिप्पियों 1:6)।

पद 7 में पौलुस 'परमेश्वर के अनुग्रह के असीम धन की बात करता है।" इस अनुग्रह का प्रमाण यह है कि इफिसियों के विश्वासी, विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाये हुए थे। लेकिन बाद में, यह सोचकर कि कहीं इफिसुस के लोग अपनी

योग्यता पर घमण्ड करके अपने विश्वास से बहक जाएं, पौलुस ने तुरन्त कहा कि यह विश्वास या विश्वास के द्वारा काम करना उनके द्वारा तैयार नहीं किया गया है वरन यह परमेश्वर का एक वरदान है।
विश्वास करने और विश्वास के प्रति काम करने की जिम्मेदारी हमारी है, लेकिन यह तभी सम्भव हो सकता है जब परमेश्वर हमें अयोग्य होने पर भी विश्वास प्रदान कर सके। विश्वास दिया गया है। पढें प्रेरितों 13:48; 16:14; 18:27; फिलिप्पियों 1:29; 2:12-13 व 2 पतरस 1:1। सुसमाचार सुनने के बाद ही मनुष्य के लिए विश्वास कर पाना सम्भव हो पाता है! परमेश्वर ही किसी को किसी व्यक्ति के पास सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजता है। पढ़ें रोमियों 10:14-17; 2 थिस्लुनिकियों 2:13-14; 2 तिमुथीयुस 1:9-10!

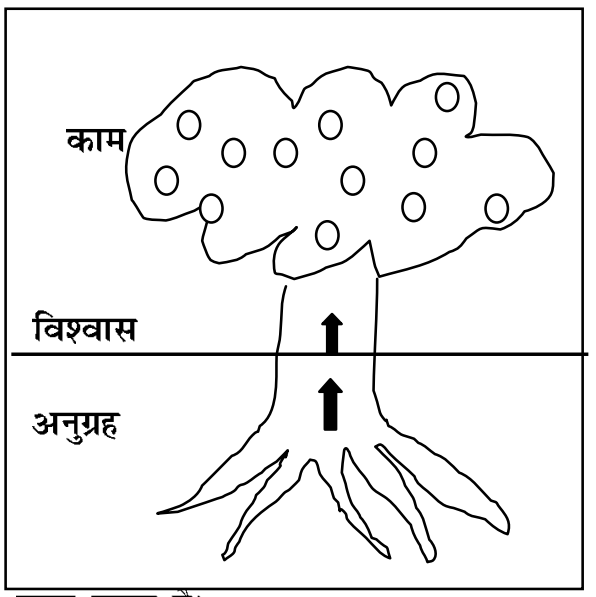
4. विश्वास और कार्यों में सम्बन्ध

हम अपने कामों के द्वारा उद्धार नहीं मिला (व्यवस्था का पालन करने से)

एक नैतिक व सदगुण सम्पन्न जीवन व्यतीत करना तथा सारी व्यवस्थाओं का पालन करना धरती पर किसी व्यक्ति को धर्मी नहीं ठहरायेगा (रोमियों 3:20)! हम धार्मिक काम करने या भले कामों को करने की वजह से नहीं बचे हैं (इफिसियों 2:9), क्योंकि ऐसा होता तो परमेश्वर की दया तथा यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर किये गये कामों से हमें बचाये जाने की महिमा चोरो हो जाती। हम अपनी ओर से किये गये किसी भी काम की वजह से उद्धार नहीं पाये हैं, लेकिन परमेश्वर ने अपनी अनन्त योजना के तहत किसी को हमारे पास सुसमाचार सुनाने के लिए और पवित्र आत्मा को हमारे भीतर काम करने के लिए भेजा (2 थिस्लुनिकयों 2:13-14)। हमारे अपने घमण्ड करने के लिए कोई स्थान बचा नहीं रहा।

हमें भले काम करने के लिए बचाया गया है। (इफिसियों 2:10)

हमारी शारीरिक व आत्मिक जन्म का उददेश्य भले काम करना है। संसार की उत्पत्ति से पूर्व ही परमेश्वर ने यह निर्धारित कर दिया था कि इस धरती पर हमारा विद्यमान होना महत्वपूर्ण व उदेदश्य पूर्ण हो (इफिसियों 1:4)। हमारा सम्पूर्ण जीवन भले कामों से भरा होना चाहिए, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे करने के लिए तैयार किया है।
हालांकि जितने भले काम हम करते हैं वे हमारी मेहनत का नहीं बल्कि परमेश्वर की तैयारी का फल है।
सारे भले काम परमेश्वर की ओर से, परमेश्वर के द्वारा और परमेश्वर के लिए हैं।



परमेश्वर ही भले कामों को रचने वाला है, वह ही भले कामों को करवाने वाला है, और उसी के लिए भले काम किये जाते हैं। हमारा वर्तमान जीवन, उसका मूल व उसका भविष्य सब केवल परमेश्वर पर निर्भर करता है। सारा आदर और महिमा उसी की है (रोमियो 11:36)!

उद्धार को एक फलों से लदे हुए पेड़ के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।
उद्धार की जड़ परमेश्वर का अनुग्रह है जिसके तहत वह हमें पवित्र आत्मा व विश्वास प्रदान करता है।
उद्धार के फल भले काम हैं, जो उसने हमारे करने के लिए तैयार किये हैं। मसीह चाहता है कि हम अर्थात उस पर विश्वास करने वाले लोग, बहुतायत से और बने रहने वाले फल लाएं (यूहन्ना 15:5,16)!हमारा मसीही व्यवहार व काम साथ मिलकर हमारे मसीही विश्वास के साथ काम करते हैं और विश्वास को सिद्ध बनाते हैं (याकूब 2:22)।

ख. याद करना व पुनरावलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** पाप का प्रायश्चित: रोमियों 5:8
3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बंटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[कलीसिया]* **कलीसिया का लक्ष्य: इफिसियों 4:1-16**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए इफिसियों 4:1-16 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर इफिसियों 4:1-16 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

***ध्यान दें।* इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हो। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

4:1-11

खोज1. किसी भी कलीसिया की बढ़ौतरी कलीसिया की विविधता और उसकी एकता पर निर्भर होती है।

कलीसिया की बढौतरी कलीसिया की एकता पर आधारित होती है। कलीसिया की बढ़ौतरी इस बात पर निर्धारित करती है कि उसमें पाये जाने विश्वासी गण किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जब सारे मसीही लोग अपनी बुलाहट के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं, अर्थात नम्रता व सौम्यता, धीरज व प्रेम के साथ तब कलीसिया आसानी से एकता के सूत्र में बंधेगी और बढ़ेगी (इफिसियों 4:1-6)।
कलीसिया की बढ़ौतरी कलीसिया की विविधता पर निर्भर करती है। यह विविधता लोगों के आत्मिक वरदानों के अभ्यास करने पर निर्भर करता है। जब कलीसिया के सारे लोग अपने वरदानों के द्वारा दूसरों की सेवा करते हैं, तब कलीसिया में आसानी से एकता व बढ़ौतरी होगी। हर एक मसीही को महत्वपूर्ण महसूस होगा और वे दूसरों को भी महत्वपूर्ण होने का एहसास दिलाएंगे (इफिसियों 4:7-11)।

4:12-16

खोज 2. कलीसिया और हर एक मण्डली की बढौतरी उसके आपसी सम्बन्धों,परिपक्वता और कलीसिया की सेवकाई पर निर्भर करती है।

प्रेम व सच्चाई के सम्बन्ध से कलीसिया की बढ़ौतरी होगी (इफिसियों 4:15)। परिपक्व मसीही जिनके जीवन में मसीहीयत का व्यक्ति अनुभव हो वे कलीसिया की बढ़ौतरी में योगदान देते हैं (इफिसियों 4:13-14)। भिन्न प्रकार की सेवकाई और सेवाएं कलीसिया को बढ़ने में योगदान देती हैं (इफिसियों 4:12,16)। जितनी प्रकार की मसीही सेवकाईयां या सेवाएं कलीसिया में होती है, उतनी ही ज्यादा किस्म के मसीही कलीसिया के कामों में सक्रिय होगें। एकरूपता पर आधारित एक कलीसिया की बढ़ौतरी में बाधा डालती है, जबकि विविध सेवकाईयों व सेवाओं पर आधारित एकता से कलीसिया की बढ़ौतरी होती है।

कदम 3 प्रश्न **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद क आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?
आईये, हम इफिसियों 4:1-16 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं आर फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछे।

लेखा लें: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये है)

(1) कलीसिया का लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप में मसीही जीवन व्यतीत करना है।

4:1-2

प्रश्न 1. परमेश्वर ने मसीहियों को कलीसिया में किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने के लिए बुलाया है?

ध्यान दें। इफिसियों 4:1 में लिखा है "अपनी बुलाहट के अनुसार योग्य चाल चलो" परमेश्वर की बुलाहट के योग्य जीवन सात विशेषताओं से पूर्ण होता है: नम्रता, सौम्यता, धीरज, एक दूसरे के साथ संयम, प्रेम, एकता और शान्ति होती है।

सौम्यता और नम्रता है?

एक सौम्य व दीन मसीही दूसरों को चोट पहुंचाने की बजाय लोगों की बातें सहने की अधिक ताकत रखता है। कोई विनम्र व्यक्ति कमजोर या बिना किसी आधार का व्यक्ति नहीं होता, जो किसी भी बयार में बह जाए। बल्कि वह भड़काने वाली परिस्थितियों में भी अधीन रहता है। वह आसानी से किसी के बहकावे में आकर कोइ नकारात्मक कदम नहीं उठाता, न ही वह दूसरों की बातों को जल्दी से नहीं मान जाता है, वह लोगों की बातों को व्यक्तिगत आक्रमण के रूप में नहीं ले लेता। वह अपने अधिकारों का इस्तेमाल करवाने के लिए कोई दबाव नहीं डालता। बल्कि, वह मानता है कि उसके पास जन्म से कोई अधिकार नहीं है, परन्तु सारे अधिकार परमेश्वर के अनुग्रह से उसे ये सारे अधिकार दिये गये हैं।

शान्ति क्या है?

एक मसीही का परमेश्वर व अन्य लोगों के साथ एक शान्तिमय सम्बन्ध होता है। परमेश्वर के साथ शान्ति का अर्थ अपने दोषों से मुक्ति है। इसका अर्थ सुनिश्चित होने से है कि उसके पुराने पाप क्षमा कर दिये गये हैं। यह इस बात का निश्चय है कि वर्तमान कठिनाईयों को भलाई ने ढांप लिया है। शान्ति का अर्थ त्यागा हुआ महसूस करने से मुक्ति मिलना है। यह इस बात का निश्चय है कि भविष्य में कोई भी चीज़ हमें परमेश्वर से दूर नहीं कर सकती है। परमेश्वर के साथ शान्ति होने से बेचैन मन को विश्राम मिलता व खाली हृदय को शान्ति मिलती है तथा बिखरा हुआ जीवन फिर से बहाल हो जाता है। दूसरों के साथ शान्ति होने का अर्थ है कि लोगों के साथ रिश्तों को लेकर दोष, भय और अस्वीकृति की भावना दूर हो गयी है। दूसरों के साथ शान्ति का अर्थ है कि संघर्षपूर्ण स्थिति खत्म होकर उसकी जगह पर रिश्तों में सामंजस्य और एक दूसरे को उत्साहित करने ने ले लिया है।

---

(2) कलीसिया का लक्ष्य विविधता में एकता बनाए रखें रहने का होना चाहिए।

4:3

प्रश्न 2. मसीही लोग व्यवहारिक तौर पर आत्मा में एकता किस प्रकार बनाए रखते हैं?

ध्यान दें। व्यवहारिक तौर पर आत्मा में एकता बनाए रखने के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं:

- अपने आपको किसी संस्था का सदस्य होने से बढ़कर मसीह की देह का सदस्य मानें।
- आपके अंगीकार (प्रेरिताई का अंगीकार) और प्रार्थना समान हो(प्रभु की प्रार्थना)।
- अपने क्षेत्र में रहने वाले लोगों में सुसमाचार पहुंचाने के लिए मसीही मण्डलियों का एक परामर्श देने वाला समूह तैयार करें।
- कम से कम वर्ष में एक बार अपने आस पास रहने वाले लोगों से जरूर मिलें। एक साथ मिलकर गीत गाएं। बाइबल के चुनिन्दा भागों से मिले प्रकाशनों को एक दूसरे के साथ जरूर बांटें। मिलकर प्रार्थना और संगति करें।
- व्यवहारिक तौर पर सघंर्ष कर रही मण्डली की सहायता करें।

4:4-6

प्रश्न 3. हमें कलीसिया की एकता को किस प्रकार समझना चाहिए?

ध्यान दें: इफिसियों 4:1-6 में, कलीसिया की एकता पर ज़ोर दिया गया है। कलीसिया की एकता बाहर से या सगंठन के तौर पर नहीं आती परन्तु आन्तरिक व जैविक होती है। यह किसी मानवीय संगठन या कलीसिया के ढाँचे से संचालित नहीं होती, वरन एकता मसीह के वास करने का नतीज़ा होती है। बाइबल के अनुसार, हर एक मण्डली,पुरनियों के परिषद की अगुवाई की अधीनता में पूरी तरह से स्वावलम्बी होती है। लेकिन सारी स्वावलम्बी मण्डलियां अपने अगुवे अर्थात यीशु मसीह (किसी संस्था या संगठन की छत्रछाया में नहीं) की अधीनता में रहते हुए एक दूसरे पर निर्भर रहती हैं।

कलीसिया (संसार भर की सारी स्वावलम्बी कलीसियाओं) के आत्मिक तौर पर एक होने के कारण, मसीही की एक देह को, अर्थात सारे मसीहियों को एकता बनाए रखने का हर भरसक प्रयास करना चाहिए। यह एकता संस्थागत एकता द्वारा नहीं परन्तु आत्मिक एकता द्वारा प्रगट होती है। मसीही लोग सारे संसार भर में एक ही परमेश्वर की आराधना करने के द्वारा एकता प्रगट करते हैं। उनके पापों से मुक्ति देने वाला एक ही उद्धारकर्ता है। उन सभी में वास करने वाला एक ही पवित्र आत्मा है। बाइबल के अनुसार उन सब का विश्वास एक ही है। उनमें एक ही प्रकार का प्रेम व आशा पायी जाती है।

---

(3) कलीसिया का लक्ष्य एकता के अन्दर विविधता को बनाए रखना है।

4:7

प्रश्न 4. मसीहीयों को आत्मिक वरदानों की विविधता को किस प्रकार देखना चाहिए?

ध्यान दें! इफिसियों 4:7,11 में कलीसिया की विविधता पर ज्यादा जोर दिया गया है। विविधता, उन विविध अनुग्रह और आत्मिक वरदानों का परिणाम है, जो यीशु मसीह ने इस संसार में अपनी कलीसिया को दिये हैं। मसीह की देह में भिन्न-भिन्न प्रकार के वरदान पाए जाते हैं। 1 कुरिन्थियों 12:7-11,1कुरिन्थियों 12:28-30, रोमियों 12:4-8 और इफिसियों 4:11 को पूरा करने या अनिवार्य तौर पर सभी वरदानों का उपयोग करने के लिए नहीं दिये गये हैं। अनुग्रह और आत्मिक वरदानों की विविधता कलीसिया की एकता का प्रोत्साहन करती है, क्योंकि हर सदस्य सेवा करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह व वरदानों का इस्तेमाल करता है और इसी तरह बदले में उसे दूसरे मसीहियों की सेवा की भी ज़रूरत पड़ती है। मसीहियों ने अनुग्रह और आत्मिक वरदानों को अपने लिए नहीं, वरन दूसरे मसीहियों की सेवा करने, विभिन्न प्रकार सो सेवा करने हेतू मसीहियों को तैयार करने के लिए, सार्वभौमिक स्तर पर मसीही कलीसिया का निर्माण करने के लिए (जिसमें सारी स्वावलम्बी कलीसियाएं शामिल हैं) तथा परमेश्वर की महिमा के लिए प्राप्त किया है।

हम मसीहियों को आत्मिक वरदानों के सन्दर्भ में चार महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

- हमें आत्मिक वरदान को एक उपहार के रूप में स्वीकार करना चाहिए (1 कुरिन्थियों12:11; इफिसियों 4:7-8), अपनी मेहनत या योग्यता के फल के रूप में नहीं।
- हमें यह समझना चाहिए कि हमारा आत्मिक वरदान बहुत से आत्मिक वरदानों में से एक वरदान है, और वह किसी हद तक सीमित है:अर्थात 'वरदान की सीमा है' (इफिसियों 4:7)।
- हमें यह समझना चाहिए कि कुछ वरदान कार्य (सेवाएं) हैं जैसे 'शिक्षा देना' (रोमियों 12:7) तथा अन्य वरदान कार्यालय के समान है (नियुक्त किये गये दास) जैसे 'शिक्षक' (इफिसियों 4:11)।
- हमें अपने आत्मिक वरदानों को अपनी महिमा के लिए नहीं, वरन पूरी कलीसिया के फायदे तथा परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल करना चाहिए (1 पतरस 4:10-11)।

4:8-10

प्रश्न 5. यीशु मसीह के उतार और उठा लिये जाने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें।

पुराने नियम व नये नियम में पाये जाने वाले अनुच्छेद।

भजन संहिता 68:18 में लिखे गये वचन कहीं से उद्धृत किये गये वचन नहीं थे बल्कि नये नियम अर्थात इफिसियों 4:8 में उनका इस्तेमाल किया गया था। जो कुछ भजन सहिंता में परमेश्वर के बारे में दिया गया है वह सब कुछ नये नियम में जाकर यीशु मसीह में पूरा होता है। मसीहियों के पास दो बाइबल नहीं परन्तु एक ही बाइबल है, जिसका एक ही लेखक अर्थात पवित्र आत्मा है (2 तीमुथीयुस 3:16), और क्योंकि पुराने नियम को बेहतर ढंग से नये नियम में प्रकाशनों के द्वारा समझाया

गया, इसलिए पौलुस को पूरा अधिकार है कि जो कुछ पुराने नियम में परमेश्वर के बारे में कहा गया था उसे वह नये नियम में यीशु मसीह पर लागू करे।

पुराने नियम में परमेश्वर ने धरती में अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की, जीते हुए लोगों से लूट हासिल की और विजय का पताका फहराते हुए बहुत से बन्धकों को छुड़ाकर आने साथ स्वर्ग में ले गया। नये नियम में धरती में रहते हुए यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु व पुनरूत्थान के द्वारा विजय प्राप्त की, उसने धरती के लोगों को वरदान दिये और बहुत से बन्धकों को स्वतन्त्र करके अपने साथ विजय के साथ स्वर्ग में ले गया।

2कुरिन्थियों 2:14 और इफिसियों 4:8 के अनुसार, वे बन्धक मसीही लोग हैं जिन्हें उसने अपने प्रेम, दया (तरस) और अनुग्रह (क्षमा) के द्वारा जीता है। अब वे लोग विजय की शोभायात्रा में यीश मसीह के पीछे पीछे चल रहे हैं(जिसका प्रारम्भ उसके स्वर्गारोहण से हुआ था)! यीशु मसीह उन्हें अपने किये हुए उद्धार के काम के बदले में उपहार के तौर पर स्वीकार करते हैं। उसने देने के लिए पाया है। वह इन बन्धकों को इसलिए स्वीकार करता है ताकि वह उन्हें धरती पर अपने राज्य के कामों के लिए अपने राज्य को दे सके। इफिसियों 4:11 में पाये जाने वाले प्रेरिताई, भविष्यद्वक्ता, प्रचारक, चरवाहे व शिक्षक वे अनुग्रहकारी वरदान हैं जिन्हें मसीह ने अपनी मसीही कलीसियाओं को दिया है (लेकिन आवश्यक रूप से सारी कलीसियाओं को नहीं) ताकि उन्हें मसीह की देह की सेवा करने के लिए तैयार किया जा सके। इफिसियों 4:11 में दिये गये वरदान कार्यालय हैं (नियुक्त सेवक) कार्य नहीं (सेवा)।

महत्वपूर्ण बात यह है कि ये कार्यालय हर मण्डली के पुरनियों की अगुवाई के अधीन होकर काम करते है (प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5; 1 पतरस 5:1)। हो सकता है कि कुछ पुरनियों में भी इस प्रकार के अनुग्रह से भरे वरदान पाये जाते हों। लेकिन यह कोई जरूरी नहीं है कि आत्मिक वरदान पाने के लिए पुरनिया होना जरूरी हो। आम लोगों को भी इन आत्मिक वरदानों की प्राप्ति हो सकती है।

मसीह का देहधारण व स्वर्गारोहण।

यीशु मसीह का 'धरती के निचले क्षेत्रों' में उतरना या और अच्छे शब्दों में कहें तो 'धरती से नीचे बसे क्षेत्रों' में उतरना उसके 'स्वर्गों से भी ऊँचे स्थान में' उठा लिये जाने के बिल्कुल विपरीत है। प्रेरित पौलुस (और 1 पतरस 3:18-22 में प्रेरित पतरस) यीशु के अवतरण को आत्माओं की भूमिगत दुनिया या पाताल लोक से नहीं जोड़ रहे हैं, वरन वह मनुष्यों के बीच में उस निम्नतम अवस्था की बात कर रहे हैं जिसमें आदि से लेकर अभी तक होकर कोई मनुष्य नहीं गुजरा है। हालांकि यीशु ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा और अपने आप को शून्य कर दिया, और मनुष्य के पतित स्वरूप को धारण कर लिया, और सभी लोगों का दास बना गया, लोगों के पापों की खातिर एक अपराधी की मृत्यु मरा (फिलिप्पियों 2:5-8) और अन्त में इसी मानवीय स्वभाव के कारण परमेश्वर द्वारा त्याग दिया गया(मत्ती 27:46)।

इसी कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ट है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है(यशायाह 45:23; फिलिप्पियों 2:9-11; 1 पतरस 3:22)। यीशु मसीह को छोड़ कोई भी ऐसा नहीं है जिसने सारी मानव जाति के पापों को अपने ऊपर लिया हो और नरक की यातनाओं को सहा हो (मत्ती 27:46)। यीशु मसीह को छोड़ और कोई ऐसा नहीं हुआ जो पुन: जीवित होकर परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ विराजमान हुआ हो और जिसने संसार के इतिहास में परमेश्वर की उद्धार सम्बन्धी योजना को प्रगट व पूरा किया हो। (प्रकाशितवाक्य 5:1-14)।

मसीह का निर्णायक राज्य।

यीशु मसीह की जीत सही मायनों में तब पूरी होगी जब वह जगत को परिपूर्ण (सिद्ध, सम्पन्न) कर देगा (इफिसियों 4:9)। वह मसीही कलीसियाओं को उसकी परिपूर्णता से भर देग (इफिसियों 1:23; 2 पतरस 1:4; 1 यूहन्ना 3:1-3)। वह तब तक राज्य करता रहेगा जब तक कि वह अपने सारे शत्रुओं को अपने पैरों तले न कर दे (1 कुरिन्थियों 15:25)। वह स्वर्ग और पृथ्वी की सारी चीज़ों को अपनी अधीनता में कर देगा (इफिसियों 1:10)। अन्तत: सारे जगत में उसका राज्य होग (दानिय्येल 2:44)! और उसका राज्य अनन्तकाल का होगा (2 पतरस 1:11)!

---

(4) कलीसिया का लक्ष्य सारे मसीहियों को किसी न किसी प्रकार की सेवा के लिए तैयार करना है।

4:11-12

प्रश्न 6. एक कलीसिया अपने सदस्यों को किस प्रकार तैयार करती है?

ध्यान दें।

तैयार करने वाले वरदान।

एक मण्डली उन नियुक्त दासों के द्वारा मसीहियों को तैयार करती है जिन्हें तैयार करने के लिए वरदान प्राप्त हों। जिन्हें मसीह व कलीसिया की ओर से 'प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, प्रचारक, चरवाहा और शिक्षक के रूप में' नियुक्त किया गया है।

- 'प्रेरित' गण वे लोग है जिन्हें मिश्नरी के तौर पर नयी कलीसिया की स्थापना करने के लिए भेजा जाता है।
- 'भविष्यद्वक्ता' वे लोग हैं बाइबल के संदेशों को प्रचार करते या उनका दावा पेश करते हैं।
- 'प्रचारक' वे लोग हैं जो खास तौर पर अन्यजातियों के बीच में जाकर उन्हें सुसमाचार सुनाते हैं।
- 'चरवाहे' वे लाग हैं जो भेड़ों (मसीहियों)की देखभाल करते हैं।
- 'शिक्षक' बाइबल की शिक्षा देने वाले लोग होते हैं।

जिस मसीहीयों ने दूसरों को तैयार करने का अनुग्रहकारी वरदान प्राप्त किया हो वे मण्डली के अगुवे नहीं होते, क्योंकि मण्डली के अगुवे हमेशा 'पुरनियों के परिषद' का एक हिस्सा होते हैं (1 तीमुथीयुस 4:14)। उन्हें हमेशा अधिकारियां की अधीनता और मण्डली के पुरनियों की देखभाल में काम करना चाहिए। निश्चय ही उनमें से कुछ पुरनियों के पास दूसरों को प्रशिक्षित करने का वरदान हो सकता है। (1 तीमुथीयुस 5:17)

तैयार करने वाले वरदानों का लक्ष्य।

वरदान प्राप्त मसीहियों को दूसरे मसीहियों का तैयार करना चाहिए ताकि वे मसीही की देह में अपनी भूमिका को निभा सकें। अत: हर एक मसीही कलीसिया में किसी न किसी काम को करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। वे स्थानीय और सार्वभौमिक कलीसिया में अलग अलग काम करने के लिए तैयार किये जाते हैं। उदाहरण के लिए, कई मसीहियों को प्रचार करने के लिए ही तैयार किया जाता है; लेकिन कुछ दूसरों को शिष्यता की शिक्षा देने के लिए तैयार किया जाता है। उसी तरह से मसीही जन प्रचार, शिक्षा,सलाह, सेवा करने, दान देने, देखभाल आदि, के लिए तैयार किये जाते हैं। कुछ लोगों को बच्चां पर सेवकाई निभाने के लिए तैयार किया जाता है, तो कुछ लोग जवानों की सेवा, कुछ बुजुर्गों, कुछ विदेशी और कुछ शरणार्थियों की सेवा करने के लिए। कलीसिया को कोई भी सदस्य केवल आकर कलीसिया में बैठकर चले जाने वाला नहीं होना चाहिए। हर एक सदस्य ने उस काम में हिस्सा लेना चाहिए जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए सौंपा है (मरकुस 13:34; 1 कुरिन्थियों 3:5-6)।

मसीही कलीसिया पहले ही संसार भर को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला समूह है। यह संसार में एक मत का सबसे बड़ा जन समूह हैं। लेकिन यदि आज संसार में हर मसीही एक सेवा का काम कर ले, तो संसार भर में मसीही कलीसियाओं को प्रभाव और भी बढ़ जाएगा। मसीही लोग पहले हो सारे देशों के लोगों को यीशु के बारे में बता रहें हैं। मसीह समाज पहले ही स्वस्थ परिवार व स्वस्थ समाज को बनाने का काम कर रहा है। मसीही लोग शिक्षा और अस्पताल और समाज के अन्य कई क्षेत्रों में अपना योगदान दे रहे हं। मसीही लोग संसार को पढ़ने के लिए अच्छी पुस्तकें व पत्रिकाएं, गाने के लिए अच्छा संगीत व देखने के लिए अच्छे ज्ञानप्रद कार्यक्रम प्रदान कर रहे हैं। हर एक मसीही को परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने के लिए एक औज़ार बनना चाहिए। राज्य का अर्थ लोगों के जीवन व उनके हृदय में यीशु मसीही की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था का प्रभाव होना (कुलुस्सियों 1:13)! जब कोई कलीसिया इन लक्ष्यों का पालन करेगी, तो वह आत्मिक गुणवत्ता में तथा गिनती दोनों में बढ़ेगी। और वह मण्डली परमेश्वर के लिए अत्यधिक महिमा का कारण होगी!

---

(5)कलीसिया का लक्ष्य मसीहियों के बीच में रिश्तों को मज़बूत बनाना है।

4:13

प्रश्न 7. एक कलीसिया किस प्रकार से मसीहियों के बीच मज़बूत रिश्तों का निर्माण कर सकती है?

ध्यान दें। हर कलीसिया के प्रत्येक सदस्य ने मसीहियों के बीच में रिश्तों को मज़बूत बनाना चाहिए।

रिश्ते एक दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारियों पर आधारित होते हैं।

हम मसीही लोग एक दूसरे के प्रति 'जिम्मेदारी' को निभाकर दूसरों को उत्साहित करने का काम करते हैं। उदाहरण के तौर पर, हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं, हम एक दूसरे का बोझ उठाते हैं, हम एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं, हम बुद्धिमानी के साथ एक दूसरे को शिक्षा देते व चेताते हैं।

रिश्ते सार्वभौमिक मसीही विश्वास और मसीह को व्यक्तिगत रूप में जानने पर निर्भर होता है।

पद 13 में लिखा है कि " जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएँ"। हमारे सम्बन्धों में एकता हमारे विश्वास में आधारित होनी चाहिए। यहां पर विषयपरक रूप में विश्वास पर जोर दिया गया है। जिसका अर्थ है कि, सार्वभौमिक व स्थानीय कलीसिया में एकता का आधार बाइबल(सही मायने समझाते हुए) की शिक्षाएं होनी चाहिए, जिससे मसीही विश्वास का निर्माण होता है।

हमारे रिश्तों में एकता यीशु मसीह के ज्ञान पर भी आधारित होनी चाहिए। यहां पर व्यक्तिपरक भाव में होकर ज्ञान पर अधिक ज़ोर दिया गया है। इसका अर्थ है कि सार्वभौमिक कलीसिया व स्थानीय कलीलिया में सारे विश्वासी यीशु मसीह को जानने वाले व उसे अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता मानने वाले हों। और यीशु मसीह को जानने में यह बात भी शामिल है कि हम उसके साथ नियमित तौर पर घनिष्ट सम्बन्ध बनाए रखते हैं। अत: मसीहियों के बीच में आपसी सम्बन्ध इस बात पर आधारित होना चाहिए कि हर एक मसीही का यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध हो, वे बाइबल की शिक्षाओं को जानते हों तथा उनमें से हर एक बाइबल की शिक्षाओं का पालन करता हो।

---

(6) कलीसिया का उददेश्य सारे मसीहियों को परिपक्व बनाना है।

4:13-15

प्रश्न 8. कलीसिया किस प्रकार से उसके मसीहियों को अनुशासित करती है?

ध्यान दें।

शिष्यता का लक्ष्य परिपक्वता है।

परिपक्व मसीहियों ने दूसरे मसीहियों की सहायता से नये मसीहियों को शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। इफिसियों 4:13-14 में लिखा है, "जब तक कि हम सब...एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं। ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोकें से उछाले और इधर उधर घुमाए जाते हों।" हम नये विश्वासियों को मसीह के साथ मज़बूत व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करने ,उनके चरित्र को सुन्दर बनाने तथा यीशु की आज्ञाओं को पालन करने में सहायता करके, उन्हें यीशु मसीह का चेला बनाते हैं। परिपक्वता का पैमाना मसीह की समानता है।

शिष्यता का परिणाम स्थिरता, सत्य व प्रेम है।

पद 14-15 के अनुसार परिपक्वता के कुछ प्रत्यक्ष परिणाम स्थिरता,सत्य व प्रेम है। यीशु मसीह के शिष्य को बाइबल की शिक्षाओं में उसकी स्थिरता, उसके विश्वास, बातों व कामों में सत्यता तथा उसके सभी रिश्तों और व्यवहार में उसके प्रेम के द्वारा जाना जाता है।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम इफिसियों 4:1-16 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सच्चाई के विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप सम्भवत: उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करं। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. इफिसियों 4:1-16 से इस्तेमाल किये जाने वाले सम्भावित उदाहरण।

4:1 अपनी उस बुलाहट के योग्य जीवन व्यतीत करें, जो आपको यीशु मसीह से प्राप्त हुई है।

4:1 सदगुणी व नम्र होना सीखें। कोई उकसाये तो अधीन बने रहें। जल्दी किसी के बहकावे में आकर कोई नकारात्मक काम न करें। जब कोई व्यक्ति आप पर कोई व्यक्तिगत टिप्पणी करता है, या कोई लोग दूसरी बातों को लेते हैं तो, जल्दी बुरा न माने। अपने अधिकारों का ज़ोर न दिखाएं।

4:3 स्थानीय व सार्वभौमिक मसीही कलीसिया के साथ आत्मा में एकता रखने का भरसक प्रयास करें।

4:4-6 याद रखें कि केवल एक ही परमेश्वर (परमेश्वर जिसके द्वारा, जिसमें होकर और जिसके लिए सब बना है), एक प्रभु यीशु मसीह(परमेश्वर जिसने इतिहास में मानवीय स्वभाव को धारण किया) और एक पवित्र आत्मा है (वह परमेश्वर जो सारे विश्वासियों के जीवन व हृदय में वास करता ह) (देखें 1 कुरिन्थियों 8:6)। याद रखें कि केवल एक ही पवित्र पुस्तक

(बाइबल) है जो हमें एक विश्वास के बारे में बताती है, और जिसे परमेश्वर हम सभी विश्वासियों में देखना चाहता है। याद रखें कि सम्पूर्ण संसार में केवल एक ही कलीसिया (देह) है। जिस प्रकार से देह से सारे अंग देह का हिस्सा होते हैं सारी स्थानीय कलीसियाएं या घरेलू कलीसियाएं उसी एक देह अर्थात एक कलीसिया का हिस्सा हैं।

4:7 इस सच्चाई को स्वीकार करें कि आपके आत्मिक वरदान सीमित वरदान हैं-यीशु मसीह ने इनकी परिमाप की है और उन्हें एक हद पर जाकर सीमित कर दिया है।

4:11-12 यदि आप पासबान, शिक्षक, प्रचारक, मिश्नरी हैं तो आपका लक्ष्य दूसरे विश्वासियों को तैयार करना है ताकि वे देह में अपनी भूमिका निभा सकें, कोई सेवा कर सके या दह का निर्माण करने में सहायता कर सकें। परम्परागत 'पासबान' कलीसिया में सब कुछ करने का प्रयास न करें। देह का सिर (अर्थात यीशु मसीह) चाहता है कि देह के बाकि अंग भी काम कर सकें।

4:13-14 आपके जीवन का लक्ष्य बढना व मजबूत होना चाहिए ताकि आप सिद्ध बन सकें। सिद्धता का पैमाना स्वयं यीशु मसीह की समानता है। बढ़ौतरी के दो क्षेत्र बहुत ही महत्वपूर्ण हैं: आपका व्यक्तिगत ज्ञान व यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध तथा बाइबल में मसीही विश्वास की जानकारी।

4:15-16 आपका लक्ष्य ज्यादा से ज्यादा मसीह की समानता में बढ़ना तथा सामभौमिक कलीसिया की बढ़ौतरी में भूमिका अदा करना होना चाहिए।

2. इफिसियों 4:1-16 में से व्यक्तिगत रूप में इस्तेमाल करने वाली बातों के उदाहरण।

मैं आज के बाद से यह समर्पण करना चाहता हूं कि मैं किसी नये मसीही को मसीह में परिपक्व बनने में सहायता करूंगा। मैं उन्हें मसीह के साथ रिश्ता बढ़ाने, सदगुणों का निर्माण करने तथा बाइबल की शिक्षाओं का पालन करने में सहायता करना चाहता हूँ।

मैं मसीहियों को लगातार तैयार करना चाहता हूँ ताकि वे स्थानीय कलीसिया व सार्वभौमिक कलीसिया में सेवा का कोई काम कर सकें। मैं नये मसीहियों को शिष्य बनाने, प्रचार करने व शिक्षा देने के लिए कुछ लोगों को प्रचारक के रूप में तैयार करना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें इफिसियों 4:1-16 में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]*
		दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में होकर **लगातार प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]**
		अगले अध्याय के लिए

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ इफिसियों 4:1-16 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: निर्गमन 16:1-10:25 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। उद्धार एक वरदान है। इफिसियों 2:8-9। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

5- चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।